UGC NET Paper= 2.. Sanskrit

Filler Form

YouTube

🎯JRF का जलवा 🔥🏆

दर्शन - साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

UNIT=4

Daily = 6 pm

Class-34

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

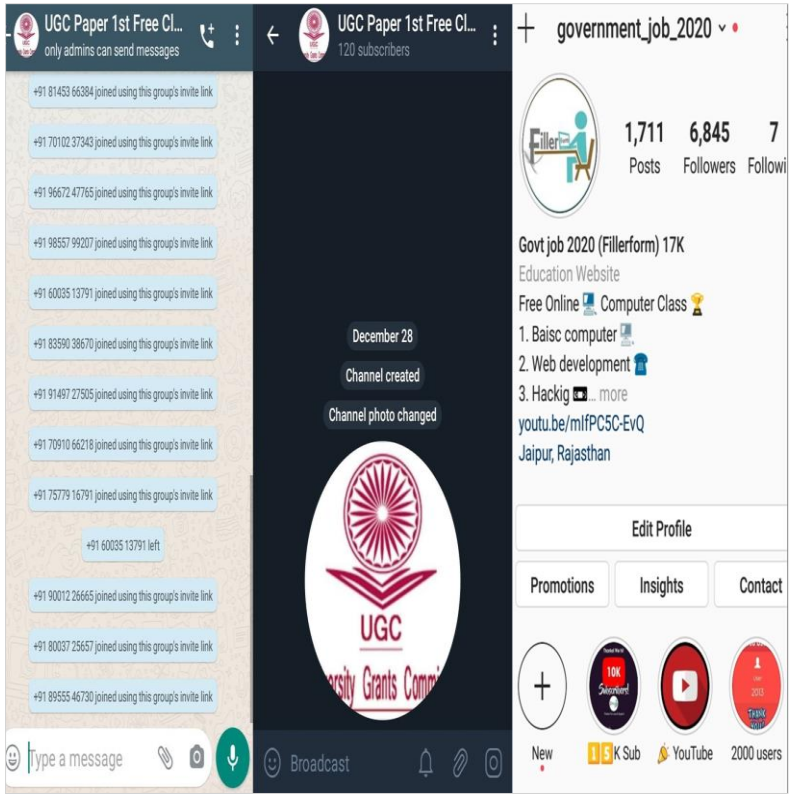
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
government_job_2020
1,711 Posts
6,845 Followers
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
December 28
Channel created
Channel photo changed
Type a message
Broadcast
New
K Sub
YouTube
2000 users

Filler Form
LATEST UPLOADS
UGC NET Paper 1st
Teaching Aptitude
"Level of Teaching"
LEARNING MATERIAL
Quizzes
Notes
Sample Papers
UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
100% OFF
5000+MCQ+PYQ
Free Books
fillerform

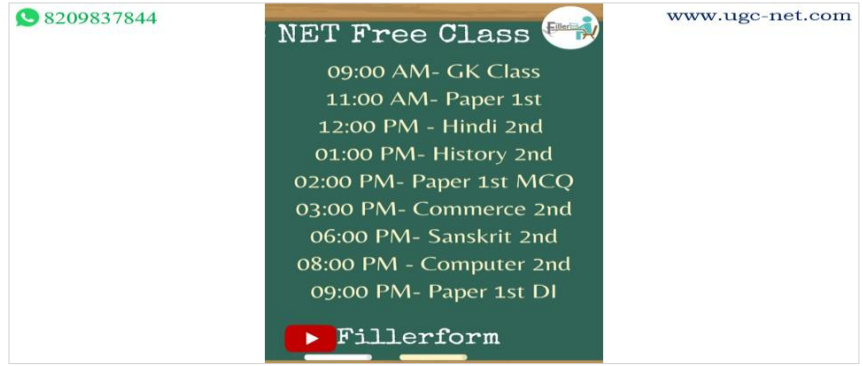
8209837844
NET Free Class
www.ugc-net.com
09:00 AM- GK Class
11:00 AM- Paper 1st
12:00 PM - Hindi 2nd
01:00 PM- History 2nd
02:00 PM- Paper 1st MCQ
03:00 PM- Commerce 2nd
06:00 PM- Sanskrit 2nd
08:00 PM - Computer 2nd
09:00 PM- Paper 1st DI
Fillerform

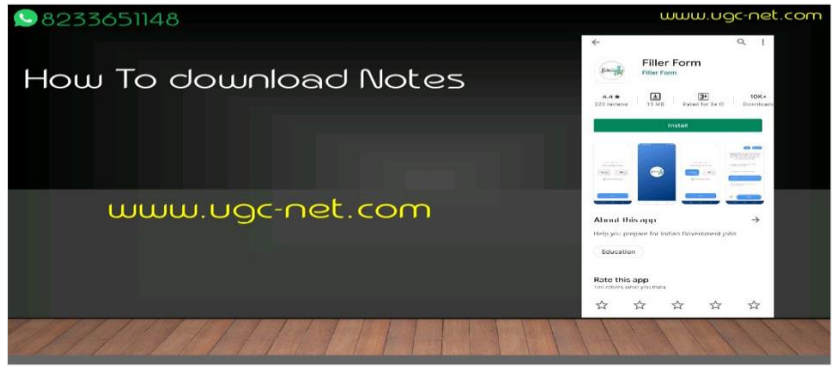
8233651148
www.ugc-net.com
How To download Notes
www.ugc-net.com

UGC NET PAPER = SANSKRIT...
JRF का जलवा
13th march 2022
Google Meet
Time = 6 pm
NIDHU CHAUDHARY
B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

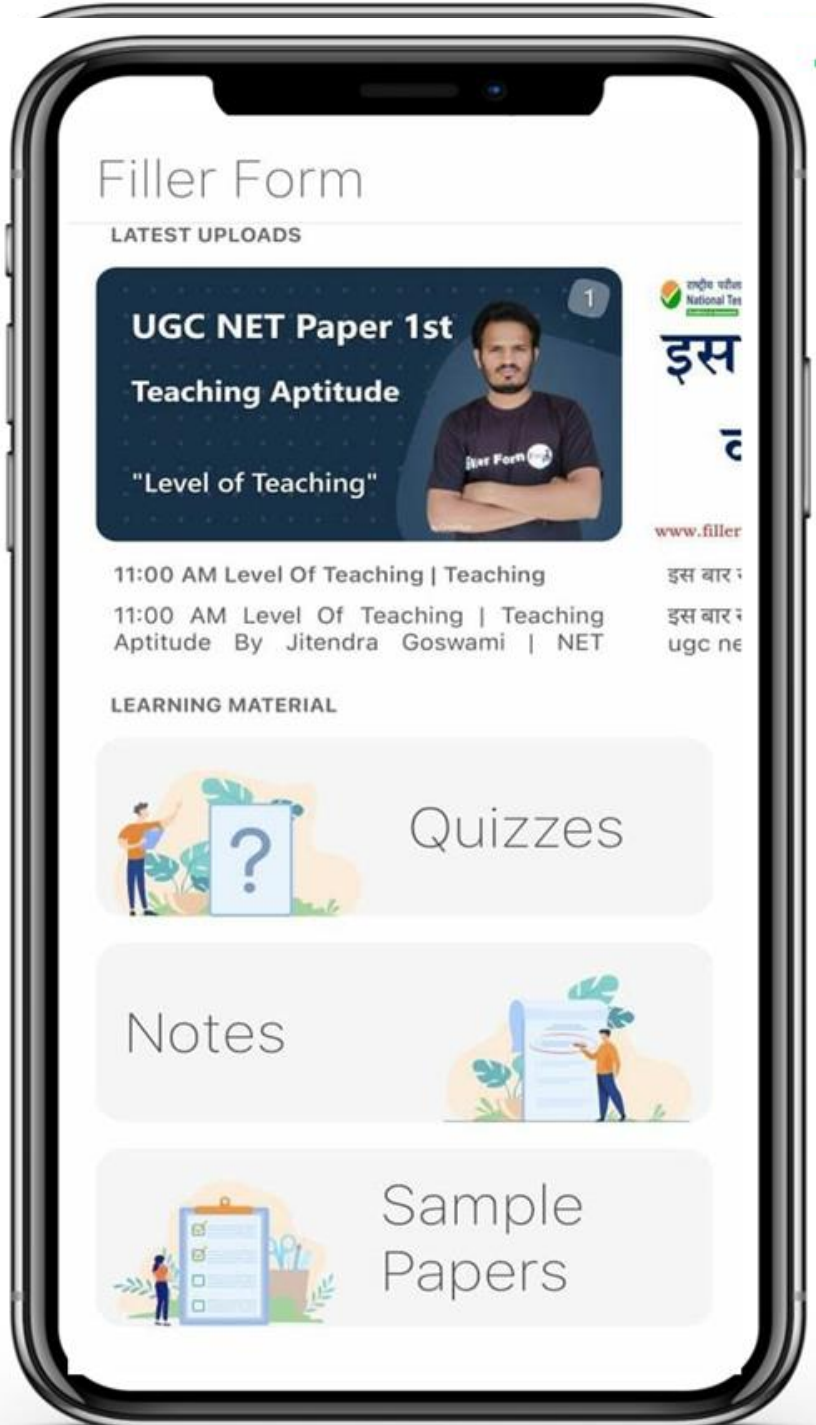

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

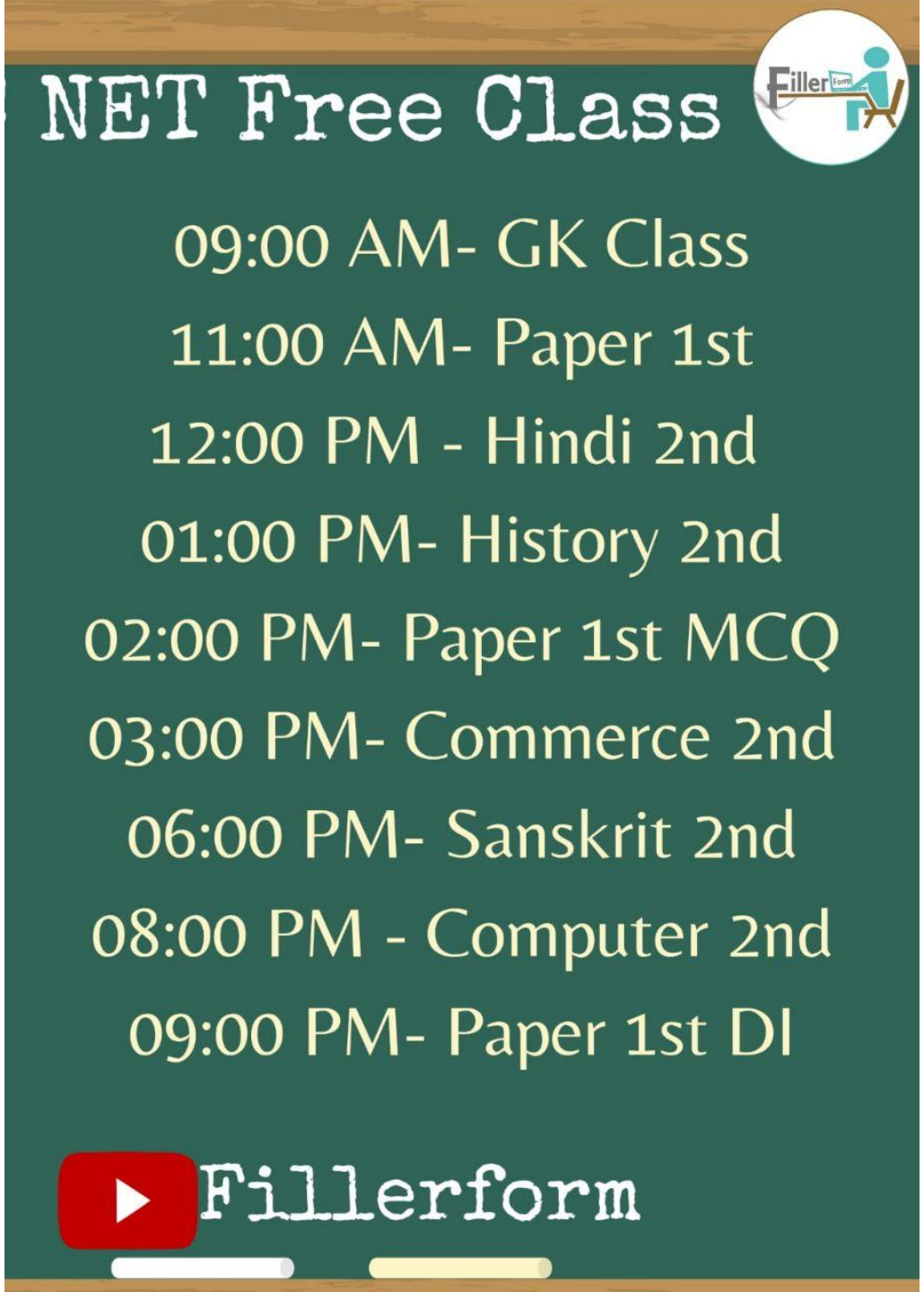

8233651148

www.ugc-net.com

How To download Notes

www.ugc-net.com

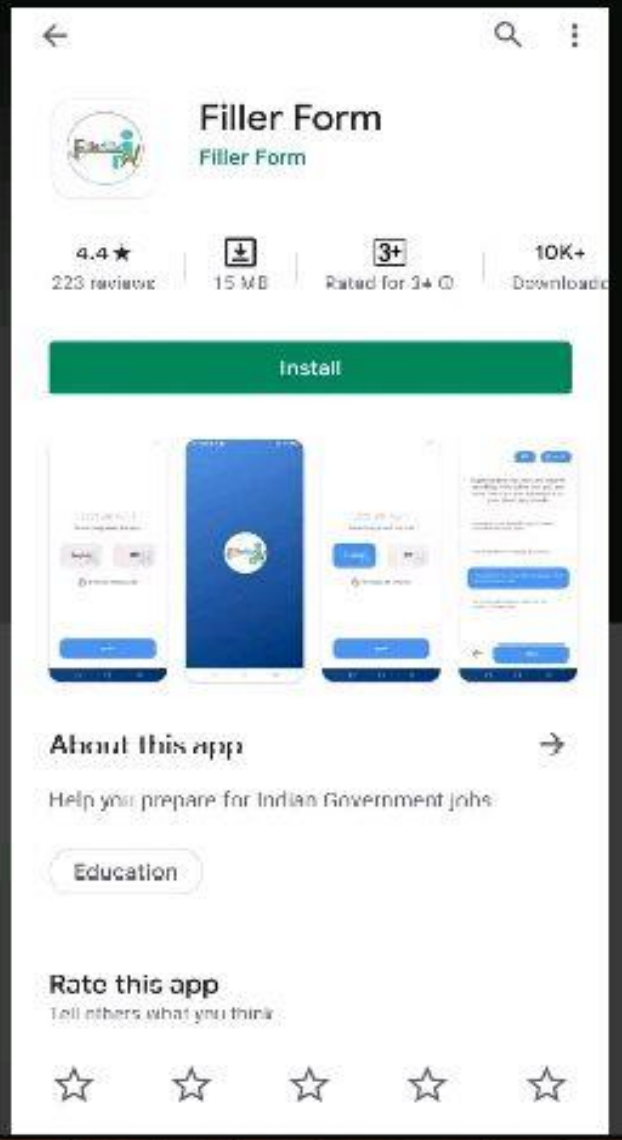

UGC NET PAPER = SANSKRIT...

🎯JRF का जलवा 🔥 🏆

13th march
2022

Time =
6 pm

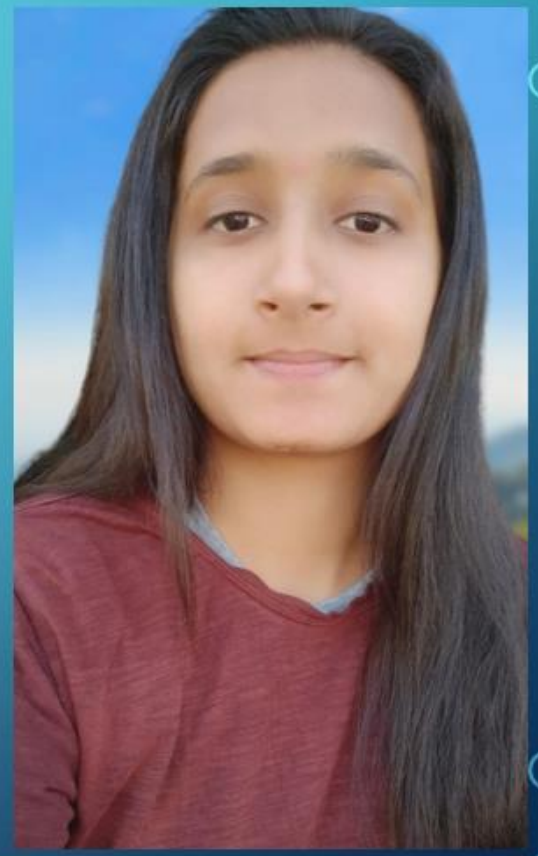

Google Meet

NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

Home work Answer.....

18. तर्कसङ्ग्रहानुसारं प्रमाणानि सन्ति -

(A) त्रीणि (B) चत्वारि

(C) पञ्च (D) षट्

19. 'प्रमा' इत्युच्यमाने अधोलिखितेषु कस्य निरसनं भवति ?

(A) प्रमितिः (B) अनुमितिः

(C) स्मृतिः (D) उपमितिः

Today's Topic…

हेत्वाभास

8209837844 www.ugc-net.com

॥हेत्वाभास॥

"हेतुवद् आभासन्ते इति हेत्वाभासा:" जो वास्तव में हेतु न होते हुए भी हेतु के समान भासित होता है, उसे हेत्वाभास कहते हैं । अर्थात् दोषयुक्त दुष्टहेतु ही हेत्वाभास है । दोषयुक्त होने के कारण वह हेतु नहीं कहा जाता है अत: वह 'हेत्वाभास' कहलाता है । हेत्वाभास पांच प्रकार के होते हैं-

1. असिद्ध
2. विरुद्ध
3. अनैकान्तिक
4. प्रकरणसम
5. कालात्ययापदिष्ट

8209837844 www.ugc-net.com

1. असिद्ध

लक्षण- "लिङ्गत्वेनाऽनिश्चितो हेतुरसिद्धः"।

जिस हेतु में लिङ्गत्व निश्चित न हो, अर्थात् **'व्याप्ति'** और **'पक्षधर्मता'** दोनों अथवा दोनों में से कोई एक सिद्ध न हो, वह 'असिद्ध' नाम का हेत्वाभास कहलाता है। असिद्ध तीन प्रकार का है-

(1) आश्रयासिद्ध-

जिस हेतु का आश्रय (पक्ष) सिद्ध न हो, उसे आश्रयासिद्ध कहते हैं।

उदाहरण- "गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्, सरोजारविन्दवत्"।

साध्य- सुरभित्व, **साधन-** अरविन्दत्व, **पक्ष-** गगनारविन्द,

8209837844 www.ugc-net.com

आकाश कमल सुगन्ध से युक्त है, क्योंकि वह भी कमल है, तालाब के कमल के समान। आकाश पर कभी भी कोई पुष्प नहीं खिलता है, अतः यहां पर **'अरविन्दत्वात्'** (हेतु) का आश्रय **'गगनारविन्द'** (पक्ष) को बनाया गया है। आकाश में पुष्प न दिखाई देने के कारण यह 'पक्ष' आश्रय से ही असिद्ध है। अतः यह आश्रयासिद्ध हेत्वाभास का उदाहरण है।

82098 net.com

(2) स्वरूपासिद्ध-

जिस हेतु का अपने आश्रय (पक्ष) में अस्तित्व ही न हो उसे स्वरूपासिद्ध कहते हैं ।

उदाहरण- "शब्दोऽनित्यः चाक्षुषत्वात्, घटवत्"।

साध्य- अनित्यत्व, **साधन-** चाक्षुषत्व, **पक्ष-** शब्दः,

शब्द अनित्य है क्योंकि वह चक्षु से ग्रहण करने योग्य है, घट के समान। यहां पर **'चाक्षुषत्व'** (हेतु) **'शब्द'** (पक्ष) में नहीं है, क्योंकि शब्द आकाश का गुण है और उसका ग्रहण केवल 'श्रोत्रेन्द्रिय' से ही होता है । यहां पर 'चाक्षुषत्व' यह हेतु स्वरूपतः ही असिद्ध है ।

8209837 gc-net.com

(3) व्याप्यत्वासिद्ध-

जिस हेतु में 'व्याप्ति' सिद्ध न हो उस हेतु को 'व्याप्यत्वासिद्ध' कहते हैं। व्याप्यत्वासिद्ध दो प्रकार का होता है ।

1. व्याप्तिग्राहक प्रमाणाभावात्-

यह व्याप्तिग्राहक प्रमाण का अभाव होने से होता है ।

उदाहरण- "शब्दः क्षणिकः सत्वात्, यत् सत् तत् क्षणिकं, यथा जलधरपटलं"

साध्य- क्षणिकत्व, **साधन-** सत्व, **पक्ष-** शब्दः,

अर्थात् शब्द क्षणिक है, क्योंकि वह सत्व है, जैसे- मेघसमुदाय । यहां पर शब्द की सत्ता (साधन) होने से क्षणिकत्व (साध्य) की सिद्धि न होने पर उचित व्याप्ति का ग्रहण न होने से यहां व्याप्यत्वासिद्ध हेत्वाभास है।

820983

c-net.com

2. उपाधिसद्भावात्-

इसमें उपाधि के रहने से 'व्याप्ति' की सिद्धि नहीं हो पाती।

उदाहरण- "क्रत्वन्तवर्तिनी हिंसा अधर्मसाधनं, हिंसात्वात्, क्रतुबाह्यहिंसावत्"।

साध्य- अधर्मसाधनत्व, **साधन-** हिंसात्व, **पक्ष-** क्रत्वन्तवर्तिनी हिंसा, अर्थात् यज्ञ में होने वाली हिंसा 'अधर्म' का साधन है, हिंसा होने से, यज्ञ के बाहर की जाने वाली हिंसा के समान। यहां पर **'अधर्मसाधनत्व'** रूप 'साध्य' की सिद्धि करने में **'हिंसात्व'** हेतु कारण नहीं है, अपितु यहां पर **'शास्त्रनिषिद्धत्व'** उपाधि ही उसमें कारण (प्रयोजक) है। अत: यहां पर उपाधि का सद्भाव होने से व्याप्ति की सिद्धि नहीं हो पा रही है। इसलिये यह व्याप्यत्वासिद्ध हेत्वाभास का द्वितीय उदाहरण है।

8209837844
.ugc-net.com

उपाधि- "साध्यव्यापकत्वे सति साधनाव्यापकः उपाधिः" 'साध्य' का 'व्यापक' होने पर भी जो 'साधन' का 'अव्यापक' धर्म हो, वह उपाधि कहलाता है ।

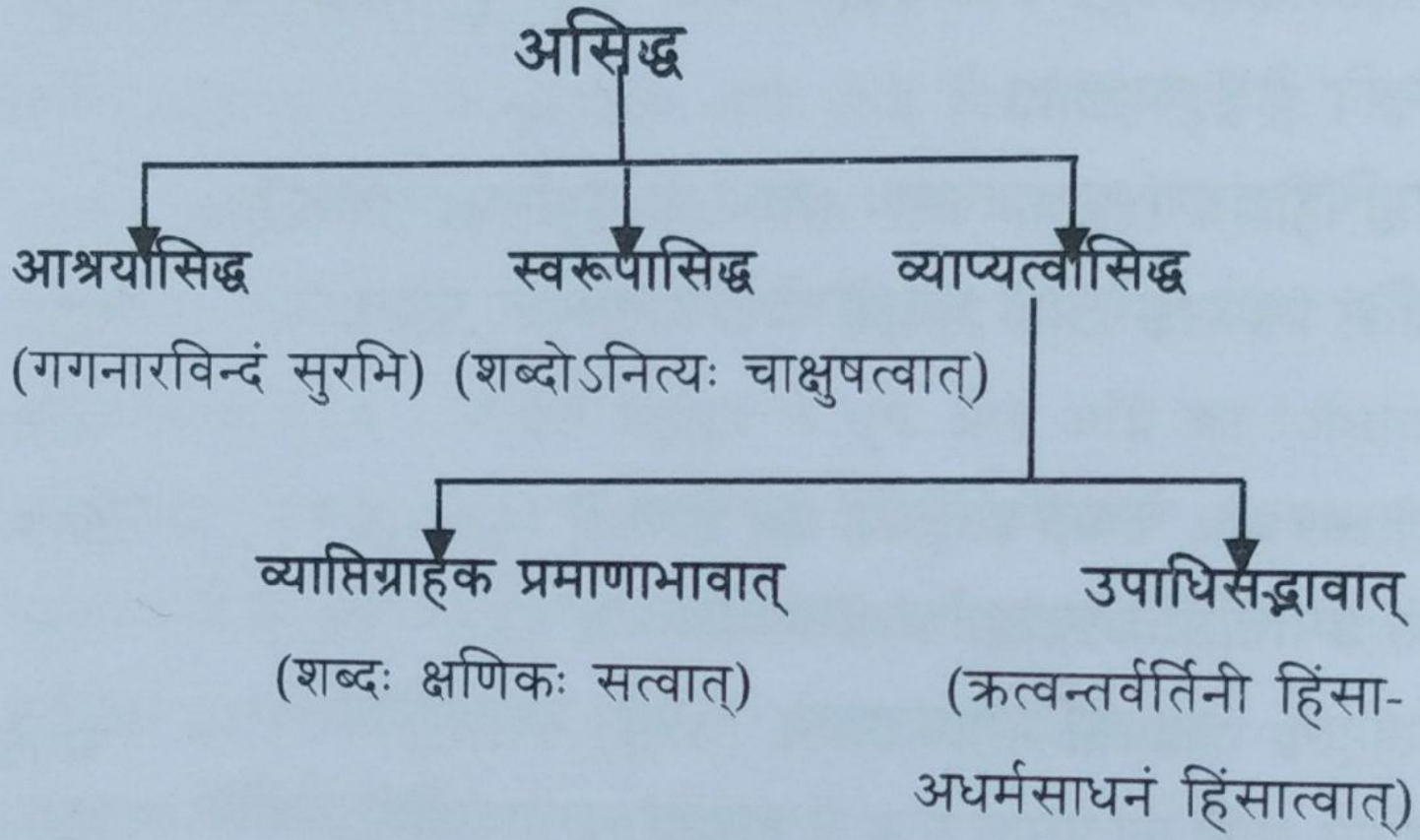

8209… www.ugc-net.com

2. विरुद्ध

लक्षण- **"साध्यविपर्ययव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः"**

साध्य के विपर्यय अर्थात् विपरीत (अभाव) से व्याप्त हुए हेतु को 'विरुद्ध' हेत्वाभास कहते हैं ।

उदाहरण- **"शब्दो नित्यः कृतकत्वादात्मवत्"।**

साध्य- नित्यत्व, **साधन-** कृतकत्व, **पक्ष-** शब्दः ।

शब्द नित्य है क्योंकि वह कृतक (जन्य) है, जैसे- आत्मा । इस अनुमान में **'कृतकत्व'** (हेतु) **'नित्यत्व'** रूप (साध्य) के विपरीत (अभावरूप) **'अनित्यत्व'** से व्याप्त है, अतः यहां विरुद्ध हेत्वाभास है ।

8209837844

ww.ugc-net.com

3. सव्यभिचार (अनैकान्तिक)

लक्षण- "सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः"

'सव्यभिचार' हेतु अनैकान्तिक हेत्वाभास है। जहां 'साध्य' का 'हेतु' 'साध्य' के साथ नियमतः नहीं रहता, अपितु 'साध्याभाव' के साथ भी रहता है, उस हेतु को 'अनैकान्तिक' कहते हैं। सव्यभिचार हेत्वाभास दो प्रकार का है-

1. **साधारण- "पक्षसपक्षविपक्षवृत्तिः साधारणः"**। जो पक्ष, सपक्ष, विपक्ष, इन तीनों में रहता है उसे साधारण अनैकान्तिक हेतु कहते हैं।

उदाहरण- "शब्दो नित्यः प्रमेयत्वात् व्योमवत्"

साध्य- नित्यत्व, **साधन-** प्रमेयत्व, **पक्ष-** शब्द।

शब्द नित्य है, क्योंकि वह प्रमेय है, जैसे- आकाश। इस अनुमान में **'प्रमेयत्व'** हेतु साधारण अनैकान्तिक है, क्योंकि वह **'नित्य'** पक्ष या सपक्ष (आकाशादि) और **'अनित्य'** विपक्ष (घटपटादि) तीनों में रहता है। इसलिये यह साधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास कहलाता है।

8209837844 www.ugc-net.com

2. **असाधारण-** **"सपक्षाद् विपक्षाद् व्यावृत्तो यः पक्ष एव वर्तते सोऽसाधारणानैकान्तिकः"**। जो सपक्ष और विपक्ष दोनों में न रहकर केवल पक्ष में ही रहता हो उसे असाधारण अनैकान्तिक हेतु कहते हैं।

उदाहरण- "भूर्नित्या गन्धवत्वात्"

साध्य- नित्यत्व, **साधन-** गन्धवत्व, **पक्ष-** भूः ।

भूमि नित्य है क्योंकि उसमें गन्ध है । इस अनुमानप्रयोग में **'गन्धवत्व'** (हेतु) **'सपक्ष'** (आकाशादि नित्यपदार्थ) तथा **'विपक्ष'** (जलादि अनित्य पदार्थ) दोनों से व्यावृत्त होकर केवल 'पक्ष' में रहता है । आकाशादि नित्य पदार्थों की **'गन्धवत्व'** इस हेतु से सिद्धि न होने से यह सद्धेतु नहीं है । अतः यह असाधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास कहलाता है ।

8209837844 www.ugc-net.com

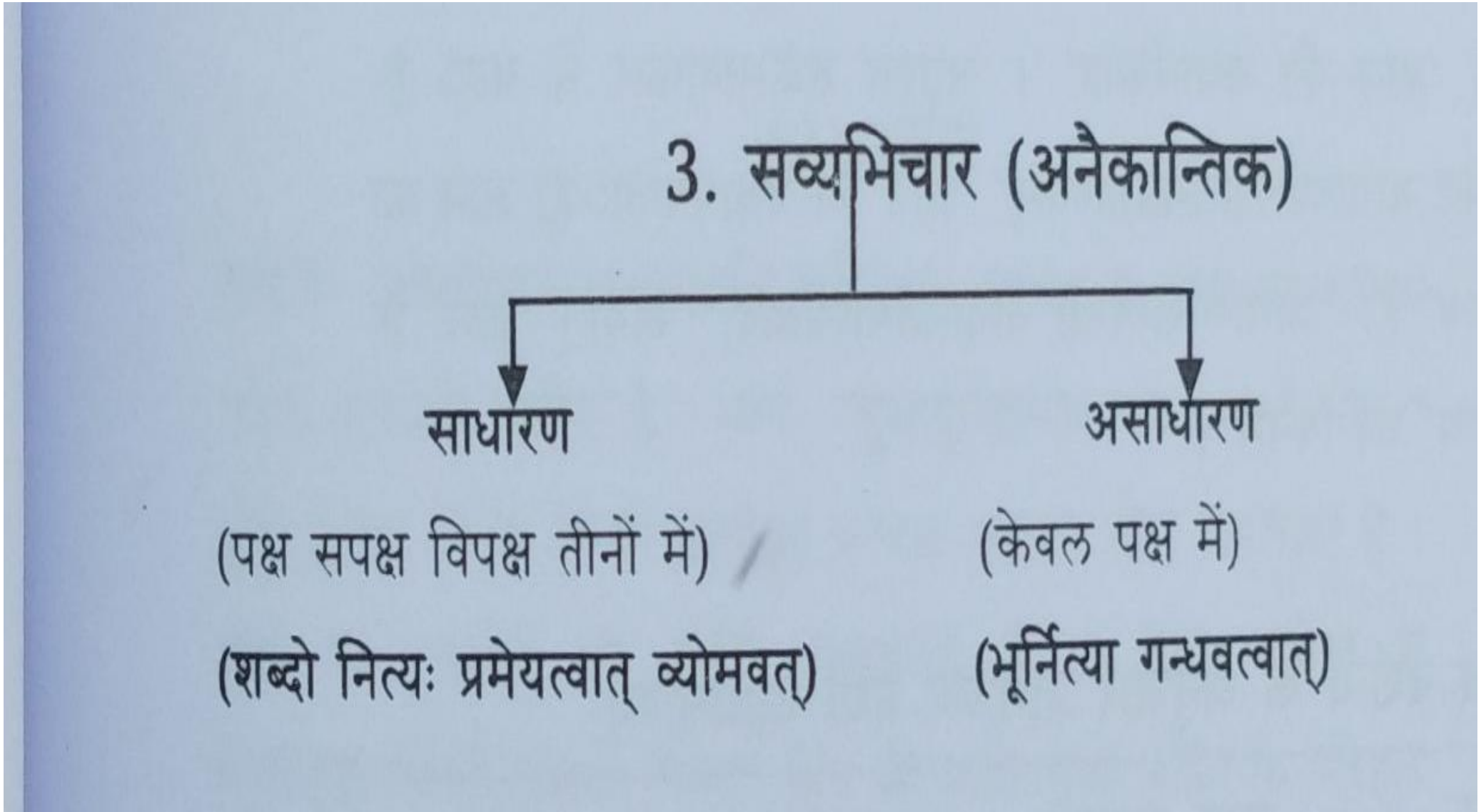

8209837844 ugc-net.com

4. प्रकरणसम (सत्प्रतिपक्ष)

लक्षण- "यस्य हेतोः साध्यविपरीतसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते"

जिस हेतु के साध्य के विपरीत अर्थ का साधक दूसरा हेतु विद्यमान रहता है, उसी को प्रकरणसम कहते हैं, इसी का दूसरा नाम सत्प्रतिपक्ष है।

उदाहरण- "शब्दोऽनित्यः नित्यधर्म रहितत्वाद"।

साध्य- अनित्यत्व, **साधन-** नित्यधर्म रहितत्त्व, **पक्ष-** शब्दः ।

शब्द अनित्य है, क्योंकि वह नित्य के धर्म से रहित है ।

"शब्दो नित्यः अनित्यधर्मरहितत्वात्"।

साध्य- नित्यत्व, **साधन-** अनित्यधर्म रहितत्त्व, **पक्ष-** शब्दः ।

शब्द नित्य है, क्योंकि वह अनित्य के धर्म से रहित है ।

इस प्रकार साध्य के विपरीत अर्थ का साधक दूसरा हेतु विद्यमान होने पर यहां प्रकरणसम हेत्वाभास है ।

8209837844 www.ugc-net.com

5. बाधित -(कालात्ययापदिष्ट)

लक्षण- "पक्षे प्रमाणान्तरावधृतसाध्याभावो हेतुर्बाधितविषयः"।

जिस हेतु के पक्ष में किसी अन्य प्रबल प्रमाण से साध्याभाव निश्चित कर दिया जाता है, उस हेतु को 'बाधित विषय' या 'कालात्ययापदिष्ट' कहते हैं ।

उदाहरण- "अग्निः अनुष्णः कृतकत्वात् जलवत्"।

साध्य- अनुष्णत्व, **साधन-** कृतकत्व, **पक्ष-** अग्निः ।

अग्नि शीतल है, जन्य होने से, जल के समान । यहां पर **'कृतकत्व'** हेतु का साध्य **'अनुष्णत्व'** है, उसका अभाव अर्थात् उष्णत्व की उपलब्धि

8209837844 www.ugc-net.com

'अग्नि' रूप 'पक्ष' में प्रत्यक्ष प्रमाण से निश्चित हो चुकी है। क्योंकि स्पार्शन प्रत्यक्ष से ही अग्नि में उष्णत्व का ज्ञान हो जाता है। इस प्रकार यह बाधित हेत्वाभास कहलाता है।

Next class....

- उपमान प्रमाण
- शब्द प्रमाण
- अर्थापत्ति प्रमाण
- अभाव प्रमाण
- परामाण्यवाद

Home work Question....

15. प्रमाणस्य लक्षणं वर्तते -

(A) यथार्थज्ञानम्
(B) प्रमाकरणम्
(C) उपमितिकरणम्
(D) परामर्शज्ञानम्

16. न्यायदर्शने प्रथमनिर्दिष्टः पदार्थः कः ?

(A) प्रमेयम्
(B) प्रयोजनम्
(C) संशयः
(D) प्रमाणम्

FEEDBACK

- आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 📑 📝

For More Information....

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

/Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

जिसने भी खुद को खर्च किया है,
DUNIYA ने उसी को GOOGLE पर SEARCH किया है।।
www.fillerform.com
fillerform
2

THANK YOU